Notification No :

Notification Date :

Name of Scholar : Noorul Hoda

Name of Supervisor : Indu Virendra

Name of Department : Hindi

Topic of Research : HINDI KI PRAMUKH SAHITYIK PATRIKAON PAR BHOOMANDLIKARAN KE PRABHAV KA ADHYAYAN (2000-2015)

हिन्दी की साहित्यिक पत्रिकाओं पर भूमंडलीकरण के प्रभाव का अध्ययन (2000-2015)

Finding

बीज-शब्द : भूमंडलीकरण, साहित्यिक पत्रिकाएँ, विमर्श, बाजारवाद, सामाजिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक समन्वय, भाषा।

वैश्विकरण शब्द को भूमंडलीकरण की संज्ञा दी जाती है। इन दोनों शब्दों के लिए अंग्रेजी में केवल एक शब्द का प्रयोग किया जाता है। जिसे 'ग्लोबलाइज़ेशन' (Globalization) कहते हैं। वर्तमान में वैश्वीकरण शब्द समूची मानव संस्कृति के साथ गहरा संबंध स्थापित कर चुका है। चाहे वह साहित्य हो, शिक्षा हो, संस्कृति हो, या अन्य कोई भी क्षेत्र भूमंडलीकरण से अछूता नहीं है। वैश्वीकरण का शाब्दिक अर्थ होता है पूरे विश्व का एकीकरण करना। इस एकीकरण का मकसद आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक और संस्कृतिक गतिविधियों से है। जहाँ बगैर किसी बंधन के एक देश से दूसरे देश तक वस्तुगत उत्पादनों, विचारों और सभ्यता-संस्कृति आदि का आपस में आदान-प्रदान होता रहता है। भूमंडलीकरण सिर्फ उत्पादों और बाज़ार पर ही असर नहीं डालता। वह हमारे रोजमर्रा के जीवन को भी प्रभावित करता है। जिसके सकारात्मक तथा नकारात्मक दोनों रूप देखने को मिलते है।

ग्लोबलाइज़ेशन पूरे विश्व को एक साथ जोड़कर एक साहित्यिक बाजार बनाने का कार्य कर रहा है। भूमंडलीकरण ने देश दुनिया के दायरे को सीमित कर दिया है। इंटरनेट ने तो जनसंचार के क्षेत्र में क्रांति की लहर पैदा कर दी है। भूमंडलीकरण के माध्यम से विभिन्न देशों की अर्थव्यवस्था में परिवर्तन आया है। लोगों की रुची, जीवन-शैली, भाषा का फैलाव भूमंडलीकरण के मुख्य उद्देश्य रहे है।

भूमंडलीकरण के प्रभाव से साहित्यिक पत्रिकाएं भी अछूती नहीं रह पायी है। साहित्यिक पत्रिकाओं पर भी भूमंडलीकरण ने अपनी गहरी छाप छोड़ी है। साहित्यिक पत्रिकाएं साहित्यिक रचनाओं के साथ-साथ विशेष विषयों पर भी अपनी लेखनी प्रस्तुत करती रही हैं। साहित्यिक पत्रिका विभिन्न विषयों पर लेख, कविताएं, कहानियां और रचनाओं को संग्रह के रूप में अपनी पत्रिका में जगह देती रही है, जिसमें सामाजिक सरोकार, स्त्री विमर्श, दलित विमर्श, आदिवासी विमर्श और अल्पसंख्यक विमर्श के अलावा राजनीतिक, कला, संस्कृति, विज्ञान, व्यापार, पर्यटन, स्वास्थ्य और खेल जैसे मुद्दें सम्मिलित हैं। साहित्यिक पत्रिकाओं में प्रकाशित होने वाले विमर्शों को व्यापक रूप से प्रचार-प्रसार करने और सूचनाओं का अदान-प्रदान करने में भूमंडलीकरण का योगदान रहा है।